IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैशालीः प्राचीन एवं वर्त्तमान

डॉ0 रजनीकांत
एम0 ए0, पी– एच0– डी0
ग्रामः छोटी बलिया उपर टोला
पोः लखमिनियाँ, जिलाः बेगूसराय (बिहार)

वैशाली भारत के प्राचीनतम राज्यों में से एक है। यह वही राज्य है जिसने विश्व को सर्वप्रथम गणतंत्र दिया जो वर्त्तमान समय में दुनिया की सर्वोत्तम शासन प्रणाली है।

वैशाली राज्य की स्थापना लगभग 1342 ई0 पूर्व में हुई होगी। राम प्रकाश शर्मा ने भी वैशाली की स्थापना पर प्रकाश डाला है।[1] भागवत पुराण में भी वैशाली का वर्णन आया है। इनमें नामोनेदिष्ट को वैशाली का राज मिला। इसने इसकी राजधानी वैशाली बनाई।[2] ऋगवेद, यजुर्वेद तथा ऐतरेय ब्राह्मण में भी नाभाग–नेदिष्ट का वर्णन मिलता है। इसमें कहा गया गया है कि नाभाग–नेदिष्ट अत्यधिक धार्मिक विचार का था। वैशाली के अति प्राचीन शासकों में विशाल इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक हुआ। प्राचीन साहित्यों में वैशाली के दो नाम दिये गये है– विशालपुरी तथा वैशाली। विशालपुरी नामकरण राजा विशाल से इसके संबंध का द्योतक है तथा समय–समय पर इस नगर का विकास होता रहा जिसके कारण इसे विशाल बनाना पड़ा। इसलिए विशाल शब्द से इसका नाम वैशाली पड़ा। बाल्मीकि रामायण से भी यह पता चलता है कि राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम विशाल था। इस महाराज विशाल के नाम पर ही विशालपुरी बसायी गई थी। दूसरी मान्यता यह है कि विशाल या वैशाली शब्द में ''शाला'' शब्द महत्वपूर्ण है। ''शाला'' शब्द को साल वृक्ष के रूप में प्रयुक्त किया गया है। इस नगर के समीप इसी के क्षेत्र में ''गोसिंग सालवन'' नामक एक वन था, जिसके नाम पर संभवतः इस क्षेत्र का नाम वैशाली पड़ा।

जातकों[3] से भी यह पता चलता है कि साल का एक अर्थ आकार या दीवार होता है। वैशाली एक के बाद एक तीन दीवारों से धिरी हुई थी। इन दीवारों के बीच एक गाबुत का अंतर था। महात्मा बुद्ध के समय में यह तीन दीवारों से धिरा हुआ था। इनमें तीन द्वार थे। माना जाता है कि वैशाली की स्थापना राजा विशाल ने की। इसी कारण इस वंश के राजाओं को वैशालक कहा गया है वैशाली का अंतिम राजा सुमति था। बाल्मीकि रामायण से पता चलता है कि श्रीराम चन्द्र तथा लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ सिद्धाश्रम से चलने पर सोन नदी को पार किया, इसके बाद उन्होंने नौका से गंगा नदी पार कर गंडक के जलमार्ग से मिथिला के लिए प्रस्थान किया। विश्वामित्र ने उन्हें इस सुंदर विशाल नगरी तथा उसके वैभव का देखकर इन्हें विशाल नगरी की स्थापना एवं इतिहास को बताया।[4]

सुमति के बाद वैशाली का इतिहास छह शताब्दियों तक अंधकारपूर्ण रहा तथा लगभग 725 ई0 पूर्व तक वैशाली में लिच्छिवयों द्वारा गणतंत्र की स्थापना हुई। लिच्छिवयों द्वारा स्थापित वज्जिसंध 750 ई0 पूर्व से 484 ई0 पूर्व तक कायम रहा। यह वैशाली वर्द्धमान महावीर तथा महात्मा बुद्ध को विशेष था।

मगध सम्राट अजातशत्रु के द्वारा वज्जिसंघ का नाश हुआ और यह मगध राज्य के अंतगर्त आ गया। कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र में भी वैशाली का वर्णन है। सम्राट अशोक ने वैशाली के बसाढ़ के समीप कोल्हुआ में एक सिंह स्तंभ प्रतिष्ठित किया था जो आज भी स्थित है।

वैशाली राज्य के उत्तर में विदेह राज्य था।[5] योगेन्द्र मिश्र[6] मानते हैं कि कराल जनक के बाद विदेह राज्य बना रहा।

वैशाली की पहचान मुज¶फरपुर जिले में स्थित बनियाबसाढ़ एवं इसके आस–पास के गाँवों से की जाती है। इसमें बसाढ़, चकरमदास, तथा कमन छपरा हाजीपुर (वैशाली) जिले में है तथा बनियाकोल्हुआ और बसुकुण्ड मुजफ्फरपुर जिला में है। वैशाली को 20 प्रमुख नगरों में प्राचीन काल में स्थान दिया गया था।[7] प्राचीन पालि साहित्य में वैशाली का नाम हिमालय तथा गंगा के बीच की भूमि के दस गणतंत्रों में दिया गया है। वैशाली गणतंत्र का विनाश 525 ई0 पूर्व में अजातशत्रु ने की। सुत्तनिपात में वैशाली का नाम मगधपुरा अर्थात् मगध राजधानी अंकित किया गया है।

7वीं शताब्दी ई0 में ह्वेनत्सांग[8] भारत आए थे। उसके वर्णन से पता चलता है कि उस समय वैशाली राज्य की सीमा का जोड़ लगभग 1000 मील था। इसमे राजधानी वाले नगर का लगभग 12 मील था। नगर के लगभग सभी बौद्ध विहार एवं उपवन नष्ट हो चुके थे। केवल 3 या 4 चैत्य बचे थे, जिनमें कुछ बौद्ध भिक्षु निवास करते थे। जैन धर्म वालों की संख्या प्रचुर थी। प्रचीन बौद्ध को उन्होने विष्णु का अवतार मान लिया था।

प्राचीन वैशाली धर्म की वह नगरी थी, जहाँ छठी शताब्दी ई0 पूर्व में धर्म को सर्वोपरी स्थान दिया गया यहाँ के आम्र उपवनों और विहारों में एक ओर तो वर्द्धमान महावीर और उनके शिष्यों का धर्म की शिक्षा देते देखते है वहीं दूसरी ओर अन्य धर्मापदेशकों के साथ महात्मा बुद्ध को हम इस नगरी में अनेकों बार धर्मोपदेश करते देखते है। प्रजापति गौतमी भी भिक्षुणी संध के साथ वैशाली में कुछ दिनों के लिए प्रवास की थी।

वर्त्तमान में वैशाली

वर्त्तमान समय में वैशाली बिहार राज्य के तिरहुत प्रमंडल का एक जिला है। यह मुजफ्फरपुर से अलग होकर 12 अक्टुबर 1972 को एक स्वतंत्र जिला बना जिसका मुख्यालय हाजीपुर में है। बज्जिका तथा हिन्दी यहाँ की मुख्य भाषाएँ है। यह जिला भगवान महावीर की जन्म स्थली होने के कारण जैन धर्म के मतावलम्बियों के लिए एक पवित्र नगरी है। यह जिला राष्ट्रीय स्तर के कई संस्थानों तथा केले, आम, लीची के उत्पादन के लिए भी जाना जाता है। यहाँ एक प्रसिद्ध बरैला झील है जो कि 263 एकड़ में फैला है। इसकी जनसंख्या 34,95,201 है एवं 1335 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर धनत्व है।[9] इसका क्षेत्रफल 2036 वर्ग किलोमीटर है, जिसका समुद्र तल से औसत ऊँचाई 52 मीटर है। गंगा, गंडक, बया, नून यहाँ की नदियाँ है। इसकी चौहदी उत्तर में मुजफ्फरपुर, दक्षिण में पटना, पूर्व में समस्तीपुर एवं पश्चिम में सारन जिला है।

प्रशासनिक विभाग की दृष्टिकोण से वैशाली जिला 3 अनुमंडल, 16 प्रखंड, 291 ग्राम पंचायत तथा 1638 गाँवों में बटाँ है। अपराध नियंत्रण के लिए जिले में 22 थाने तथा 6 सुरक्षा चौकी है। समूचा जिला गंगा के उत्तरी मैदान का हिस्सा है।

वैशाली जिला की स्थानीय संस्कृति तिरहुत के अन्य जिलों के समान है लेकिन पर्व–त्योहारों या विवाह के समय गाये जाने वाले गीत मिथिला से प्रभावित है। वर्तमान समय में भी स्थानीय लोगों में जातिभेद अधिक है इसलिए शादी–विवाह अपने समूह में पारिवारिक कुटुम्ब या रिश्तेदार द्वारा प्रायः तय किये जाते है।

इस जिला की साक्षरता मात्र 66.60 प्रतिशत है। जिले में 954 प्राथमिक विद्यालय, 386 मध्य विद्यालय तथा 81 उच्च विद्यालय है। इसके अलावा सर्व शिक्षा अभियान के अंतगर्त यहाँ 105 विद्यालय, 246 नवसृजित प्राथमिक विद्यालय, 210 बाल श्रम विद्यालय, 6 चरबाहा विद्यालय तथा 1 जवाहर नवोदय विद्यालय है।[10] इसके अतिरिक्त निजी विद्यालयों की संख्या भी काफी है।

जिले में वर्त्तमान में तीन राष्ट्रीय राजमार्ग तथा दो राजकीय राजमार्ग गुजरती है। इस जिले में रेल पथ (ब्रॉड गेज) की कुल लम्बाई 71 किलोमीटर है। भारत के महत्वपूर्ण शहरों के लिए यहाँ से सीधी ट्रेन सेवा है। बौद्ध सर्किट के तहत एक नई रेल लाइन पटना से हाजीपुर, वैशाली होकर प्रस्वावित है। इस जिले का नजदीकी हवाई अड्डा राज्य की राजधानी पटना में स्थित है। जिले की सीमा रेखा पर बहने वाली गंगा तथा गंडक नदी नौकागम्य है। हाजीपुर, अक्षयवटराय नगर, राधोपुर तथा महनार के पास से बहने वाली गंगा नदी की हिस्सा राष्ट्रीय जलमार्ग 1 पर पड़ता है जिससे यह जिला पश्चिम में बनारस होते हुए इलाहाबाद से तथा पूर्व में कोलकाता होते हुए हल्दिया से जुड़ा है।

संदर्भः

1. मिथिला का इहिास; राम प्रकाश शर्मा, पृ0 76
2. हिस्ट्री ऑफ तिरहुत; श्याम नारायण सिंह पृ0 22
3. जातकः भदंत आनंद कौशल्यायन; नं0 94,149
4. बाल्मीकि रामयण; सर्ग 47, 11.12
5. हिस्ट्रोरिकल ज्योग्राफी एण्ड टोपोग्राफी ऑफ बिहार; एम0 एस0 पांडेय, पृ0 90
6. होमेज टु वैशाली; योगेनद्र मिश्र, पृ0 30
7. रिपोर्ट ऑफ आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया; 1903–04 पृ0 8–12
8. पूर्वोद्धत पुस्तक; रामशरण शर्मा; पृ0 71
9. 2011 के जनगणना के अनुसार
10.कैलेन्डर शिक्षा विभाग, वैशाली 2020